DIGITIZED BY NILESH ANANT, RPR

जो आज है उससे बेहतर रचने की प्रक्रिया में.....

आरंभ

अंक–३ अक्टूबर ८६'

प्र० ले० सं० राजहरा की बुलेटिन

संपादकीय

दधिचियों में तब्दील होते हुये,.....

कृष्ण कुमार नायक.....

आग के दरिया में
उतरने का एहसास धूप है।
धूप किसान का हसिया
लुहार की गरम भट्ठी
ईंट – शिल्पी का पसीना
और। कामगार – साथियों की
भूख का टिफ़िन है
धूप के दिन – दोपहर
पहाड़ों पर घूमने नहीं जाते
तब भी । कितने उम्दा खयालों से
भरे होते हैं।
जैसे हमारे साथी
रोजमर्रा की लड़ाइयों में
धूप पहन कर
दधिचियों में तब्दील होते हुए.

– ये पंक्तियां स्व. कृष्ण कुमार नायक की कविता की हैं। युवा कवि कृष्ण कुमार नायक ने १२ सितम्बर को आत्महत्या कर ली। अपने हमउम्र रचनाकारों में नायक सर्वाधिक लिखने और छपने वाला रचनाकार था। नये–नये प्रतीकों एवं बिम्बों के जरिये जीवन की विसंगतियों और उससे उपजी पीड़ा को खूबसूरती के साथ अभिव्यक्ति देने वाला रचनाकार स्व. कृष्ण कुमार नायक अपनी कविता के नये रूप की निरंतर तलाश में था। प्रारंभ में उसने खूब गज़लें लिखीं। बाद में गजलों को भी एक नया रूप देने का प्रयास वह कर रहा था। चीजों और घटनाओं को पकड़ने की उसमें गजब की क्षमता थी। वह प्रगतिशील रचनाकार था और प्रतिबद्ध भी। विचारधारात्मक प्रतिबद्धता न केवल उसकी रचनाओं में होती थी बल्कि अपनी राय सामने वाले व्यक्ति के प्रभाव और शक्ति की ज़द में न आते हुए स्पष्टतः रख देने में भी थी। इसके बावजूद उसने आत्म-हत्या क्यों की ? यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है।

प्रत्येक घटना के सदर्भ में लोग निजी समझ और मान्यताओं के आधार पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। नायक की आत्महत्या पर भी कई तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त की जा सकती है। जैसा कि आम तौर पर होता है, लोग आत्महत्या करने वाले व्यक्ति को बुजदिल और कायर कहकर उस व्यक्ति और उससे सम्बन्धित तमाम घटनाओं को एक झटके में खारिज कर देते हैं। कृष्ण कुमार को बुज़दिल कहने का हमारा साहस नहीं होता क्योंकि उसने अपने एक-एक पल को आत्मसात करते देखा है। उसकी आकांक्षाओं एवं इरादों की इतनी हत्याएं हुई हैं कि उसकी आत्महत्या ही बेमानी हो जाती है। नायक जैसे रचनाकार मौजूदा परिस्थितियों में दोहरा संघर्ष करते हैं। जो उसके करीबी मित्र हैं वे अच्छी तरह जानते हैं कि नायक अपनी जिन्दगी में शुरु से अंत तक सामाजिक, आर्थिक विसंगतियों के कोड़े खाता रहा, उसकी मार सहता रहा। उस मार ने उसके मन-मस्तिष्क को तार-तार कर दिया था। इसका प्रभाव न केवल उसके कृशकाय शरीर में स्पष्ट परिलक्षित होता था, बल्कि उसकी कविताओं में भी उतरता था। तभी तो वह लिखता है :

वो खून सने लोग।
थे खिलौने लोग।
हमीं को ले डूबे,
ये अपने लोग।

दूसरी जगह लिखता है :

आइने हैं टूटे
सांप्रदायिक आलम।
अभिव्यक्ति शून्य,
शब्दों के एलबम।।

आग के दरिया में उतरने का अहसास वह हमेशा करता रहा और आखिरकार रोजमर्रा की लड़ाइयों में व्यवस्था की मंशा पर दधीचियों में तब्दील हो गया जिसकी शेष हड्डियां उपयोगवादी जाति और संस्कृति के काम आ रही हैं। नायक की आत्महत्या पर चलताऊ टिप्पणी करके उसे एकदम से खारिज कर देने का अब समय नहीं है। हमें गंभीरता पूर्वक विचार करना ही होगा कि एक संवेदनशील, वैज्ञानिक विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध रचनाकार ने जिस वातावरण में आत्महत्या की है, वह कैसा है ?

यह मुद्दा आज की दुनिया में ईमानदार आत्मालोचन के लिए पेश करते हुए हम स्व. कृष्ण कुमार नायक के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

आरंभ के आगामी किसी अंक को हम "नायक-अंक" का रूप देकर उसकी रचना यात्रा के साथ-साथ उसके सामाजिक-आर्थिक संघर्ष के अछूते पहलुओं की विवेचना करने का प्रयास करेंगे।

इस अंक में हम नरेश निशांत का आलेख "प्रेमचंद और प्रासंगिकता का प्रश्न" दे रहे हैं। लेखक ने इस आलेख में कुछ जरूरी मुद्दों पर चर्चा की है। चन्दनसिंह ठोस की कहानी 'सबसे बड़ा फर्ज' तथा नथमल शर्मा की कविता-पुस्तिका पर डॉ. वीरेन्द्र मोहन की समीक्षा भी दे रहे है। ज्ञानरंजन द्वारा हिन्दी में रूपांतरित जेविगर हेरांड की कविता के साथ-साथ अन्य कवियों की कविताएं भी हैं। श्रीमती शिखा मित्रा एवं स्वरूप जैन, इनबिल्कुल नये रचनाकारों को भी हम "आरंभ" दे रहे हैं।

यह अंक पूंजी आश्रित प्रकाशन जगत की बेहद अमानवीय प्रक्रिया और चरित्र के जबड़ों में से निकालकर आप तक हम पहुंचाने में विलम्ब से सक्षम हुए हैं, अतः कुछ थकान तथा चोट के निशान आप देखेंगे मगर विश्वास है कि हमेशा की तरह आपका विश्वास, प्रोत्साहन और सहयोग हमें मिलता रहेगा।

इस अंक के लिए प्रकाशन जगत के पूंजीलोलुप आघातों को झेलने में हमारे साथी भाई रामकुमार रामरिया भी बराबर के हिस्सेदार रहे हैं। "आरंभ" अपने साथी जगत की सतत जीवंतता और जुझारुपने को जगाए चलने की एक परम्परा बने इसी उम्मीद के साथ यह अंक आपको सौंपते हुए हमें संतोष हो रहा है।

– दादूदयाल

जेवियर हेराँड की कविता

जेवियर हेराँड को १९६३ में पेरू के जंगलों में गोली मार दी गई थी। १९४० में वे पैदा हुए थे। क्यूबा में दो साल उन्होंने मार्क्सवाद का अध्ययन किया। उन्होने क्रांतिकारी आदर्शो को कर्म का जामा पहनाया। बीहड़ जंगलो के बीच बहती नदी में एक डोंगी पर सवार उन्हें पुलिस ने उस समय गोली मारी जब वे साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष कर रहे थे। बलिदान के एक वर्ष बाद उनकी कविताओं का संग्रह छपा। प्रस्तुत है उनकी एक कविता का हिन्दी रूपान्तर।

क्योंकि मेरा देश खूबसूरत है
हवा में तलवार सा
और अब तो और बड़ा और यहां तक कि
पहले से अधिक खूबसूरत
मैं खुले आम बोलता हूं
और रक्षा करता हूं उसकी
अपने जी जान से
मैं परवाह नहीं करता कि गद्दार
क्या कहते हैं
हमने रास्ते बंद कर दिये हैं
मोटे आँसुओं से
इस्पात के
आकाश हमारा है
हमारी है, हमारी रोज की रोटी
हमने बोया और काटा है
गेहूं और धरती
हमारा भी
हमेशा हमारा है
सागर
वन
और पत्ती।

(रूपान्तरकार–ज्ञानरंजन) जबलपुर

लड़ाई

१ ग्रनाडा में, लेबनान में
पाक में अफगान में
सीमाओं पर मोर्चे पर
लड़ता है आदमी
देश के लिये
ताकि देश और अधिक पंख पसार सके।
२ ईरान में ईराक में
साइप्रस में पंजाब में
मंदिर में, मस्जिद में
लड़ता है आदमी
धर्म के लिये
ताकि आदमी की आंखों पर धर्म की पट्टी
मजबूत हो।
३ खानों में, कारखानों में
बनते पुलों के पीछे
जमीं के कई फुट नीचे
दुकान और बाजारों में
लड़ता है आदमी
पेट के लिये
ताकि कल फिर काम पर आ सके।
४ देश के लिये/धर्म के लिये/पेट के लिये
जारी है लड़ाई
हर लड़ाई में बहता है लाल रंग
जीतता है देश/जीतता है धर्म/भरता है
पेट
हारता है तो बस आदमी
५ हर लड़ाई में
खड़ी फसल सा/भरे खलिहान सा
कटता है/जलता है आदमी
कटने से/जीतता है देश
जलने से/जीतता है धर्म
जब-जब ऐसा होता है
अपनी लड़ाई हारता है आदमी
मरता है/मारता है/आदमी को आदमी।

शिखरचंद जैन
दल्ली राजहर

प्रधान सम्पादक–**नसीम आलम नाग्बी**

सम्पादक–**दादू दयाल**

सम्पादक मण्डल–**सांवलाराम डाहरे**
कोमलसिंह शार्दा
शिखरचंद जैन

प्रगन्ध सम्पादक–**चन्दन सिंह ठोस**
सुभाष चन्द कुर्रे
अमर चन्द बर्मन

प्रेमचंद और प्रासंगिकता का प्रश्न

–नरेश निशांत

आधी सदी से भी अधिक का समय गुजर जाने के बावजूद आज भी प्रेमचंद को पढ़ते हुये ऐसा क्यों महसूस होता है कि हम आज के वक्त की सच्चाईयों से रु–ब–रू हो रहे हैं ? आखिर क्या वजह है जिसके चलते प्रेमचंद आज भी अपनी रचनाओं में वही ताजगी, बल्कि और भी खिला हुआ रूप लेकर हमारे बीच मौजूद हैं ? वक्त की लम्बी कतारों में गुम हो चुके कलमकारों के बीच आज भी प्रेमचंद अपनी कलम को हथियार की तरह उठाये और चोट करते हुये क्यों जान पड़ते हैं ?

साहित्य में प्रासंगिकता का सवाल भी तमाम सवालों की भांति, समाज के साथ अपने गहरे जुड़ाव की बिना पर टिका हुआ है । वास्तव में साहित्य की प्रासंगिकता की अर्थ उस समाज की अंतर्वस्तु से जुड़ा हुआ होता है । संघर्षशील साहित्य की प्रासंगिकता और संघर्ष रहित साहित्य की प्रासंगिकता में इसीलिये बुनियादी फर्क होता है । कभी–कभी कोई कलम कार बूरी तरह सताये हुये, मगर लड़ने को तैयार लोगों के साथ खड़े होकर अपनी प्रासंगिकता के साथ-साथ साहित्य को भी प्रासगिक बनाता है ।

वास्तव में जो अपने समय के संघर्षशील लोगों के लिये प्रासंगिक होता है, वह यकीनन किसी भी समय के सघर्ष के लिये प्रासंगिक होगा । प्रेमचद की खासियत यही है कि वे अपने समय के साहित्य की प्रासगिकता के कारण थ । अपनी कलम के जरिये प्रेमचद साहित्य में वही कर रहे थे, जो गाँव शहर की सड़कों, गलियों, पगडडियों, खेत–खलिहानों, चौराहों, अनाथालयों और कचहरी–थानों में हो रहा था । इस तरह प्रेमचंद का साहित्य जगत यथार्थ–– जगत के मुकाबले कहीं अधिक जागरूक और संघर्षशील था । प्रारभिक दौर की उनकी रचनाओं में यकीनन सामाजिक समस्याओं के हल की कोई बात बनती नजर नहीं आती, लेकिन वहां भी सामाजिक अंतर्वस्तु से पैदा हुई सवेदना भरपूर है । प्रेमचंद शुरूआत से ही परंपरा को तोड़ने वाले और तथाकथित सांस्कृतिक मूल्यों से बगावत करने वाले रहे हैं । प्रेमचंद लेखक ही नहीं, बल्कि समाज की हलचलों से पूरी तरह जुड़े हुये एक चौकस कार्यकर्ता भी थे । प्रेमचंद ने पूरी संजीदगी के साथ समाज की तासीर में उभरते नाड़ी स्पंदन को परखा और वैचारिक खुराक से विकासशील इतिहास–दृष्टि उम्पन्न की । प्रेमचंद की रचनाओं की अंदरूनी दुनिया समाज के दर्द और परेशानी की मुक्ति की खोज के आधार पर रची गयी है । यही कारण है कि अपने समय के समाज की सच्चाईयों को उजागर करने के कारण प्रेमचंद आज भी प्रासंगिक है ।

सोद्देश्यता, क्रांतिकारिता और प्रासंगिकता का रचना के स्तर पर गहरा रिश्ता होता है । प्रेमचंद उन रचनाकारों में नहीं थे, जो बहुधा क्रांति का प्रयोग एक रूढ़ि के रूप में करके शब्द के अर्थ को ही खत्म कर देने की साजिश रचते रहे हैं । हिन्दी में प्रेमचंद के बाद कोई दूसरा यथार्थवादी उपन्यासकार पैदा नहीं हुआ, जो पूरी शिद्दत और भरोसे के साथ कह सके, "बोट नये युग का माया जाल है, मरीचिका है, कलंक है, धोखा है" प्रगतिशीलता प्रेमचंद की सहज वृत्ति थी, सामंती व्यवस्था के शासन तंत्र और विचार तंत्र के प्रति नफरत का भाव उनमें शुरू से ही था । धर्म के पायों पर टिकी सामंती व्यवस्था आज भी पूरी तौर पर मजबूत है, इसीलिये प्रेमचंद में धर्म के ठेकेदारों के खिलाफ तीखा गुस्सा ही नहीं, बगावत का माद्दा भी है ।

प्रेमचंद साहित्य में दरिद्रगी नजर अंदाज करते चले जाने अथवा अकेलेपन और विसंगति के नाम पर आदमी की मजबूरी की ओर इशारा करके उसे बौना साबित करने की काशिश को बेजा और बेबुनियाद मानते थे । वे चीजों और मनुष्य के संबंधों और मनुष्य पर पड़ने वाले प्रभाव को देखकर ही कोई नतीजा निकालते थे । यही कारण हैं कि वे साम्राज्यवाद के उस सांस्कृतिक मोह का शिकार होने से बचे रहे, जिसे अपने बीते हुये सुनहरे कल के प्रति ही मोह था । प्रेमचंद अपनी बात को किसी भी तरह उस तक पहुचाना चाहते थे जो उनकी रचनाओं की दुनिया का वासी है । उनके किरदार सांचे में ढले हुये नहीं है और न ही किसी खास मकसद के लिये इस्तेमाल की गई चीज, बल्कि उसमें अपने समय की अच्छाईयां और बुराईयां दोनों है । प्रेमचंद की प्रतिबद्धता उस मामूली आदमी के प्रति थी जो सब कुछ गंवाया हुआ, सब तरफ से हारा हुआ और सताया हुआ था । प्रेमचंद का समूचा साहित्य इन्हीं लोगों के दर्द, जुल्म, परेशानी और इसके खिलाफ लड़ने की हो रही तैयारी का जीवंत दस्तावेज है । प्रेमचंद इतिहास की उस घड़ी के सक्रिय नागरिक थे, जब हिन्दुस्तान इस बात के लिये तैयार था कि वह अपनी खामोश और बेजान परंपराओं की फिर से पड़ताल करे और अपने आदर्शो के खोखलेपन को पहचाने । इसी सोच की जमीन पर लोटकर और जूझकर उनकी समय बुनी गई है ।

प्रेमचंद जिस दौर के रचनाकार थे, वह दौर आज भी जारी है, महज इसी बदलाव के साथ कि देश आजाद हो गया है । लेकिन सामंती पूँजीवादी और साम्राज्यवादी साजिशों से मनुष्य आज भी आजाद नहीं हो सका है । प्रासगिकता मनुष्य के जद्दोजहद के इतिहास के साथ जुड़कर नयी लड़ाई की भूमिका के कारण और भी प्रासंगिक हो जाती है । प्रेमचंद की दुनिया का संघर्ष भी उसी दुनिया के रहते ही प्रासंगिक नहीं रहेगा, बल्कि विषय वस्तु और सामाजिक सच्चाईयों पर पैनी पकड़ के कारण हमेशा प्रासंगिक बना रहेगा ।

द्वारा–कृष्णचन्द वर्मा
जूनी लाईन, बिलासपुर (म.प्र.)

मुर्गियाँ

खेत / खलिहान / मुहल्ले के
सीने में बैठा दर्द
नब्ज़ नापता है,
दहशत,
बैठ जाती है
पांव पसार कर
तब कितना मुश्किल होता है,
पीड़ा की खामोशी को
समझना,
बंद हो जाते हैं
घास / पत्तों का हिलना
चिड़ियों की उन्मुक्त उड़ान
नदी की गति
और
चुप हो जाते हैं
तप्त आँसुओं के साथ
रौंदता खेत / खलिहान / मुहल्ले।
टोकरियों मे कैद,
मुर्गियाँ—
अण्डे देती हैं,
बांधने के लिए,
गाँव की चुप्पी में ।

☐ सावला राम डाहरे
दल्ली राजहरा

माँ

मेरी माँ
तुमने मुझे जन्म दिया
अपने खून से सींचा
सिखायी – चलना
उंगली पकड़कर
दिये – बोल
मुंह – खोल
अ – आ
ज – जा
द–दा-दी।
उसके बाद तुमने छोड़ दिया मुझे
था कि बिछुड़ गया मैं
जैसे तोते का बच्चा
अपनी माँ से।
और हो जाता है कैद
लोहे के पिंजरे में
माँ मेरी
मैं भी तो हूं
तोते का बच्चा
अन्याय, उत्पीड़न के पिंजरे में
तुम्हारें प्यार बिना
दुख दर्द को चीरता
संघर्ष करता
छटपटा रहा हूँ, मुक्ति के लिए
छटपटाता रहूँगा मुक्ति तक

☐ स्वरूप जैन

सुबह यहां पर आयेगी

राहों पर नीलाम हमारी भूख नहीं हो पायेगी
अपनी कोशिश है कि ऐसी सुबह यहाँ पर आयेगी ।।
कैद हैं जिनके गोदामों में,
अपना खून – पसीना रे ;
उन्ही जमाखोरों के कारण
मुश्किल हुआ है जीना, रे
आजादी की खिड़की हर दीवार पे खोली जाएगी
अपनी कोशिश है कि ऐसी सुबह यहाँ पर आएगी ।
अभी यहाँ काला बाजारी
जारी है बाजारों में ।
बचा हुआ भी बंट जाता है
सारे डंडी मारों में ।
लेकिन कल हर चीज बराबर सबमें बांटी जाएगी
अपनी कोशिश है कि ऐसी सुबह यहां पर आएगी ।
भूख न अब ठंडी कर पाये,
आग हमारे अंदर की ।
प्यास हमारी कल न होगी,
दासी किसी समन्दर की ।
एक नई दुनियां मेहनत से यहां बसाई जायेगी
अपनी कोशिश है कि ऐसी सुबह यहां पर आएगी ।।
कभी न अपनी एका टूटे,
बटमारों की साजिश में ।
कभी हमारे पांव न भटकें
सिर्फ आपसी रंजिश में ।
कल बाहें फैलाकर मंजिल हमको गले लगाएगी ।
अपनी कोशिश है कि ऐसी सुबह यहाँ पर आयेगी ।।

☐ जीवन य
(सापेक्ष ६/७ से साभार

आरंभ के लिए शुभकामनाएं

श्री डी. के. ठाकुर उपाध्यक्ष

छत्तीसगढ़ आदिवासी मंडल
भिलाई, जि.-दुर्ग (म. प्र.)

(पृष्ठ ६ का शेष)

आलेख सत्र के बाद सांगठनिक सत्र प्रारंभ हुआ संभाग की रीवां, सीधी, सतना, शहडोल इकाइयों का प्रतिवेदन क्रमशः श्रीमती विनोद तिवारी, सोमेश्वर सिंह डॉ. तेज सिंह तथा सुरेश शर्मा ने प्रस्तुत किया। संभागीय स्तर पर चुनाव भी हुआ। जिसमे संभागीय अध्यक्ष पद पर श्री मोहन श्रीवास्तव (शहडोल, तथा महासचिव श्री सोमेश्वर सिंह (सीधी) को सर्वसम्मति से चुना गया। संगठन सत्र की अध्यक्षता डॉ. श्यामसुन्दर मिश्र तथा संचालय देवीशरण ग्रीमीण ने किया।

कहानी-

सबसे बड़ा फर्ज़

☐ चंदन सिंह ठोस

परिचय

श्री चन्दनसिंह ठोस द्वितीय विश्वयुद्ध में; बर्मा के मोर्चे पर सन् १९३९ से १९४१ तक हिन्दुस्तानी सिपाही के रूप में लड़े थे। बाद में आज़ाद हिन्द फौज के सम्पर्क में आने के कारण कोर्ट मार्शल हुआ और एक साल की कैद की सज़ मिली थी श्री ठोस जी वर्तमान में प्र. ले. सं. राजहरा इकाई के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। यह कहानी मूल रूप से उर्दू मे लिखी गई थी। प्रस्तुत है इसका हिन्दी रूपान्तर।

रूपान्तरकार— दादूदयाल।

यह द्वितीय विश्व युद्ध की घटना है। जापानियों ने बर्मा का काफी हिस्सा जीत लिया था। टांगों का मोर्चा टूट गया था और पूरम के मोर्चे से जापानी आगे बढ़ गये थे। हिन्दुस्तानी फौज का सम्पर्क एक दूसरे से टूट गया था। जापानी फौज हिन्द की सरहदों पर दस्तक दे रही थी। इसलिए हिन्दुस्तानी फौज़ को आदेश मिला था कि परिस्थितियों को देखते हुए वापस लौट चलो। खाने पीने की समस्या प्रमुख थी। मोटरों के जरिये हिन्दुस्तानी फौज को निकाला जा रहा था। साथ में शरणार्थियों के बड़े-बड़े काफिले भी निकल रहे थे। रास्ते मे, हिन्दुस्तानी जनता को; जो शरणार्थियों के रूप में हिन्दुस्तान आ रही थी; उन्हें बर्मी लोग लूट लेते थे इसलिए वे हिन्दुस्तानी फौज का सहारा लेते थी।

हमारे कम्पनी कमांडर का नाम लूस साहब था। वह अंग्रेज था। उसने आकर हमारी प्लाटून को हुक्म दिया--"साथ में आ रहे काफिले को यहाँ से आगे जाने के लिए कहो? अगर वे आगे नही जाते हैं तो पीछे लौट जाने के लिए कहो। वे किसी तरह हमारी बटालियन के पास से हट जावें। अगर वे लोग न मानें तो उन्हें गोली मारने की धमकी दो।"

तत्काल हमारी प्लाटून ने जाकर काफिले को हुक्म दिया--"जितनी जल्दी हो सके; आप लोग इस जगह को छोड़ दो।"

वे लोग हमारी बाते सुनकर और हमारे हाथों में रायफलें देखकर घबरा गये। कई लोग रोने लगे। वे काफी डरे हुए थे। अपनी सुरक्षा के लिए ही वे हमारी फौज का सहारा लिए हुए थे। फौज काफिले को अपने साथ नहीं रखना चाहती थी। इसके दो कारण थे। एक तो काफिले में हैजे की बीमारी फैल चुकी थी। दूसरा यह कि काफिला फौज के साथ होने से दुश्मन को पता चल जाता है।

इस काफिले की हालत बहुत खराब थी। काफिले में हजारों की तादाद में महिलाएँ और बच्चे शामिल थे। उसमें कई लोगों ने अपने पैरों में कपड़े बांध रखे थे। क्योंकि चलते-चलते पाँव सूज गये थे। बहुत से लोगों को कै और टट्टियाँ हो रही थी। कई औरते अपने बच्चों को सम्हाल नहीं पाती थी क्योंकि हर किसी के चार-चार, पाँच-पाँच बच्चे थे।

मेरे साथियों ने काफिले को वहां से आगे की ओर रवाना कर दिया। सारा काफिला तो चला गया आगे; किसी तरह। किन्तु एक औरत एक दरख्त के नीचे पड़ी रही। उसका मर्द उसके पास सिर झुकाये हुए बैठा था। उसके दो बच्चे थे। एक छोटा बच्चा औरत की छाती पर पड़ा हुआ दूध पी रहा था और दूसरा बच्चा जो तीन साल का था; अपने पिता के पास बैठा रो रहा था। वह आदमी भी कभी-कभी सुबक लेता था। उसके सुबकने पर उसकी आंखो से आँसू गद गदा कर वह जाता था। औरत बेहोश पड़ी थी। मुझे कुछ आश्चर्य हुआ। मैंने उसके पास जाकर पूछा--"तुम क्यों नहीं जाते हो?" "सारा दिन चलते-चलते थक गये हैं। एक कदम चलना भी मुश्किल है। ये मेरी औरत है। इसे लगातार टट्टियां हो रही है। जिसके कारण यह बेहोश हो गई है।" उसने हाथ जोड़कर कहा।

इतना सुनते ही मेरी नजरें उस औरत पर पड़ी। वह चित्त पड़ी हुई थी। उसकी साड़ी दस्त से लथपथ थी। मारे बदबू के खड़ा होना भी मुस्किल हो रहा था।

"अरे ये तो काफी बीमार है!" मेरे मुंह से निकला।

"हाँ साहब! मैं इसीलिए रो रहा हूँ: मेरी औरत हमारे साथ चल नहीं सकती है। मैं इसको छोड़कर जा भी नहीं सकता। अगर औरत मर गई तो मैं दूध पीते बच्चे को कैसे पालूंगा? इन दोनो बच्चो को कैसे देश ले जाऊंगा? अगर मैं इसके पास रहता हूँ तो मैं भी मर जाऊंगा। बच्चे तो मरेंगे ही। छोड़कर जाऊं तो कैसे?" इतना कहकर वह फफक कर रोने लगा। एकाएक मेरा हृदय दुख से भर गया। यह बर्मा का घना जंगली इलाका था। जंगली हिंसक जानवरों की भरमार थी। उससे भी अधिक हिंसक दुश्मन के सिपाही थे। जो बढ़े चले आ रहे थे। मैं मन में सोच रहा था कि अब इनका बचना

मुस्किल है। काफिला तो पहले ही चला गया था। कुछ देर बाद हम लोग भी चले जायेंगें। तब रह जायेंगे ये निरीह मात्र चार प्राणी। "नही ! नहीं !" मैं इनको मरने नहीं दूंगा। इन्हे बचाना मेरा फर्ज हैं आनन कानन मैंनें तय कर लिया। इतने में ही मेरे पास लालसिंह सिपाही भी आ गया। मैंनें उसे सारा हाल सुनाया। उसने इन चारो की ओर देखा। लालसिंह ने भी अपनी सहमति जाहिर की कि इन्हें बचाना हमारा फर्ज है। लेकिन कैसे ? कोई बात हमारी समझ में नहीं आ रही थी। इतने में पीछे से हिन्दुस्तानी फौज की गाड़ियाँ आनी शुरू हो गई। यह देखकर हम दोनों सिपाही बहुत खुश हुए। इस ख्याल से कि कुछ भी हो इन चारों को मोटर में बिठा देगें। जैसे ही मोटर हमारे नजदीक आई; हमने उसे रोका। लेकिन उसने आम नागरिक को बैठाने से इन्कार कर दिया। दूसरी आई। उसे भी रोका। उसने भी इन्कार कर दिया। इस तरह तीसरी, चौथी, पाँचवी बारी-बारी सब की सब निकल गई। लेकिन किसी में भी इन्हे बैठाने की अनुमति नहीं मिली। अब हम दोनों की परेशानियों की हद न रही। अंत में एक एम्बुलेंस, जिस पर अस्पताल का निशान लगा हुआ था; आता हुआ दिखाई दिया। मैं और मेरे साथी लालसिंह ने फैसला कर लिया कि यदि यह एम्बुलेन्स भी इन्हें बैठाने से इन्कार किया तो गोली मार कर इसकी टायरो की हवा निकाल देगें। मोटर आने से पहले ही मैं सड़क के बीच मे खड़ा हो गया। मैंने हाथ दिखाकर उसे रुकने का संकेत किया। एम्बुलेन्स गाड़ी पास आकर रूक गई। उसके सामने की सीट पर एक हिन्दुस्तानी डॉक्टर बैठा था। मैंने उसे सारी बाते बताई और उससे रहम की अपील की। "मोटर तो फौजियों के लिए है। पब्लिक के लिए नहीं !" डॉक्टर ने कहा "आप तो हिन्दुस्तानी हैं ! आप इतनी सी मेहरबानी नहीं कर सकते ?" मैंने तनिक गुस्से में कहा।

"लाओं ! जल्दी बिठाओ ! हरिअप !" डॉक्टर ने झल्लाकर बोला।

इतना सुनते ही मैंने अपनी रायफल लालसिंह को देदी दौड़कर उस आदमी के पास गया और बोला— "जल्दी करो। मोटर में बैठ जाओ।" वह दोनों बच्चों को लेकर मोटर में बैठ गया। मैंने उसकी औरत को अपने दोनों हाथों से उठाकर मोटर में डाल दिया। इतना हो चुकने के बाद डॉक्टर की आवाज आई— "शरणार्थियों को निकालने के लिए ट्रक भी तो दिये गये है ?"

लेकिन तब तक एम्बुलेन्स गाड़ी चल पड़ी थी। अब हम खुश और संतुष्ट थे कि औरत की जान बच सकती है। बच्चे नई दुनियाँ देख सकेंगे और आदमी जिन्दगी की जीत पर यकीन कर सकेगा। मोटर चलने के वक्त उस आदमी की खुशी और कृतज्ञता देखने लायक थी। लगता था कि वह हम पर अपनी सौ-सौ जान अभी कुर्बान कर देगा। उसने हाथ जोड़ कर हमें प्रणाम किया।

मेरे कपड़े दस्त से गंदे हो गये थे। मैंने वर्दी उतार कर धो डाली और गीली ही पहन ली। यह गर्मी का मौसम था। सूखने में कितनी देर लगती ? लालसिंह आराम कर रही प्लाटून के टेन्ट में पहले ही जा चुका था। मैं भी धीरे-धीरे उधर चल दिया। लेकिन मेरे मन मे डॉक्टर की बातों ने सवालों का बखेड़ो खड़ा कर दिया था। मैं बार बार सोच रहा था कि आखिर हम किसके लिए लड़ रहे हैं ? पब्लिक के लिए या राजा के लिए ??

पदचिन्ह

वह सोच रहा है कि
जायें कैसे
महत्वाकांक्षी, स्वप्निल आस्थाओं की
मंजिल तक
सामने दूर तक जाते हुए
पदचिन्ह हैं
जो पहुचते हैं
एक जगमग उजाले की दुनियां में
कई लोग खड़े हैं
दावा करते हैं कि
वे जेट यान की गति में
शूं ऽऽऽऽ
दौड़ा देगें उंगली पकड़कर
परियों के देश में पहुंचने की तरह
भला यह कैसे संभव है ?
जो पदचिन्ह
कदम – कदम
सम्हल – सम्हल कर चलने से बने हैं
उस पर चक्षुहीन बन दौड़ें
वह जानता है कि
कुछ लोग तेज गति में दौड़ाकर
भेज देना चाहते हैं
अन्तरिक्ष में
भटके उपग्रह की मानिन्द
अनन्त यात्रा में।

☐ श्रीमती शिखा मित्रा
भिलाई

मेरे शहर में शोरगुल होने लगा ...

□ डॉ० वीरेन्द्र मोहन

समकालीन हिन्दी कविता परिवर्तन का एक संकेत दे रही है। यह आकस्मिक नहीं कि जब-जब राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटना-क्रम में एक व्यापक उथल-पुथल हुई है, तब-तब कविता की स्वायत्तता बेमानी साबित हुई है और कविता के यह बदलाव साफ परिलक्षित हुआ है। हमारा समकालीन कवि अपनी परम्परा में कभी अकेला नहीं हुआ है। इसलिए जिन कवियों ने कविता को अपने रचना-कर्म का माध्यम बनाया है-उनकी एक लम्बी सूची है। नथमल शर्मा ऐसे ही कवियों में है, सूरज को देखो म० प्र० प्रगतिशील लेखक संघ बिलासपुर द्वारा प्रकाशित इनकी सोलह कविताओं का संग्रह है। मेरा उद्देश्य इन कविताओं के द्वारा समकालीन रचनाशीलता की संभावनाओं की खोज करना है।

सपाटबयानी समकालीन कविता का मुहावरा न बने, पर वह कविता सहज तो हो ही, यह उम्मीद तो हम करेंगे ही। नथमल शर्मा की कविताएं इस अर्थ में सहज है। इन कविताओं की सहजता उनकी वस्तु है। यहां बचपन के अनुभव तथा जिन्दगी की पुनर्रचना कवि ने की है। "खरगोश और कछुआ" सुनो चिड़िया, शेर और बकरी और बालाघाट के नाम ऐसी ही कविताएं है। तत्काल घटनाओं को भी कवि ने व्यापक संदर्भों में देखा है और यहां भी कवि का बचपन बार-बार जीवित हुआ है। स्कूल से लौटना, और भोपाल गैस कांड पर, कविताएं व्यापक मनुष्यता के अभाव तथा मानवीय ललक का कन्ट्रास्ट उत्पन्न करती है। परन्तु विरुद्धों का सामंजस्य जिस व्यापक भूमि पर होता है वह है वैचारिक मानक। इस दृष्टि से नथमल शर्मा की कविताएं महत्वपूर्ण है।

ये कविताएं सघन वैचारिकता की कविताएं नहीं हैं, पर विचारहीन भी नहीं है। इनकी वैचारिकता तो कई जगह बहुत साफ है, अन्धेरे और प्रकाश की लड़ाई और सूरज को बाँटने जैसी। इन कविताओं में बिम्बों का स्थूल प्रयोग अवश्य है। पर प्रतीक अपने स्थूल अर्थ में नहीं है पर एक दो जगह वैचारिक भटकाव भी है, कारण कवि ने पुराकथाओं और नीतिकथाओं की वास्तविता की जांच किए बिना उन्हें अपना लिया है। अतः सतर्क दृष्टि से ही वास्तविकता की खोज संभव है। वस्तुतः शेर और बकरी का एक घाट में पानी पीना एक खुशफहमी तो हो सकती है, सच्चाई का यथार्थ नहीं अलमान व्यवस्था को बनाए रखने की एक मोहक कल्पना हो सकती है। इसी प्रकार से "सुनो चिड़िया मे, चिड़ियों का जाल लेकर उड़ जाना सामूहिकता की दृष्टि से तो हो सकती है, पर जाल से मुक्ति नहीं। यह एक काल तक विकसित मनुष्य के प्रगतिशील चिंतन और स्वभाव का विकास तो हो सकता है, पर यह मुक्ति नहीं कहलायेगी। मुक्ति का मतलब है जाल को तोड़ना। यद्यपि मूल कथा में जाल को चिड़ियों की सहयोगी शक्तियाँ काटती हैं। अतः इस प्रकार की कविता पद्धति में स्वीकार त्याग तथा नयी संभावनाओं की दृष्टि को भी वैचारिकता की शक्ति से निर्धारित करना आवश्यक है अन्यथा कविता में एक फांक बराबर बनी रहेगी।

इधर कविता बड़ी तेजी के साथ लिखी जा रही है-जैसे मौसम में फूल खिलते हैं और चिड़िया चहचहाती है। अतः कविता की उस गंध और ध्वनि को स्थायित्व विस्तार देने की जरूरत है। यहां रंगों और ध्वनियों से शब्द को अर्थ तक पहुंचाना है। भविष्य में नथमल शर्मा जैसे कवि, कविता की नई संभावनाओं को जन्म दे तो अचरज नहीं।

मनुष्य का संकल्प उसकी पूरी जैविक प्रक्रिया का सक्षम रूप होता है। फलतः पूरी शक्ति की संकल्पना वस्तु-रूप, कारण-कार्य, संबंधों को उपेक्षित करके जन्म नहीं लेती। इसका भौतिक आधार होता है। नथमल शर्मा की कविता इसी भौतिक आधार पर निर्मित हुई है। उसके रचे जाने की प्रक्रिया और जीवन पद्धति पर आधारित है। यह जीवन संघर्ष कामी शक्तियों का है। यह वैचारिकता का सूक्ष्म और संवेदनात्मक स्तर हैं। यहां पूरा इतिहास-भूगोल परिवेश के रूप में वर्तमान है। इसीलिए इस कविता की जड़ें अपने परिवेश में है। परिवेश की समझ के साथ ही इस कविता को समझा जा सकता है। यहां कवि ने पूंजीवादी संचार-माध्यम, राजनीति और अर्थनीति को समझा है। यह समझ का पैनापन है कि कवि ने अपने खिलाफ भी आत्मसंघर्ष किया है।

इस कविता की वस्तु स्थिर नहीं गत्यात्मक है। इसका पता इस बात से चलता है कि कविता में मौजूदा समाज बदल रहा है। कविता में वह कुछ हड़बड़ी अवश्य लिये हुए है। इस हड़बड़ी की बौखलाहट को बेकाबू नहीं बनाना है और इसी के साथ ही वर्तमान की विसंगतियों से भाग कर अनागत अतीत की खुशफहमियों पर भी गर्व नहीं करना है, उस अतीत के प्रति केवल परम्परा का संबंध रखना है। किसी मोहकता और आकर्षण की आत्मघाती प्रवृत्ति के विरुद्ध भी संघर्ष करना है। यह न केवल नथमल शर्मा वरन् सभी अल्पवयस्क कवियों के लिये सावधान करने वाली बात है। परन्तु यह भी सामाजिक विकास की प्रक्रिया पर निर्भर करेगा। यह विकास की प्रक्रिया चेतना का गुणात्मक विकास करती है और करेगी।

नथमल शर्मा की कविता में बिखराव नहीं है। पर उसमें कसावट भी हाजिर नहीं है। पर ये कविताऐं लापरवाह भी नहीं है। कसावट किस सीमा तक कविता को कविता बने रहने देती है, इसको ध्यान में रखकर इस कविता की वस्तु और रूप से जूझना भी प्रगतिशील कवि का दायित्व है, नथमल शर्मा की कविता की यह सीमा है। दिक्कत तो यह नहीं है कि इस सीमा के साथ वस्तु रूप की सहजता इस प्रकार आ गई है कि कवि के लिये अपनी रचना से सबसे बड़ा खतरा यही है कि वह किसी एक के प्रति हस्तक्षेप करने से दूसरे को भी प्रभावित करेगा। अतः कुछ ऐसा करना जरूरी है कि बिना सहजता को खोए वह एक संग्रथित कविता भी हो जाए। इसके लिये समकालीन कवियों से प्रेरणा और दिशा ली जा सकती है। नथमल शर्मा की कविता एक कथात्मक एकात्मकता लिए है। उसकी यह कथात्म-

मत-सम्मत

आरम्भ-२ मिला। छोटी सी जगह से विचार का समयबद्ध सामूहिक सृजन बड़ी बात है— आप अपने अंचल की उस सर्जना को सामने ला रहे हैं; जो जीवन संघर्ष से पैदा होती है। सृजनात्मक एक के जूटता के इस कार्य की जितनी प्रशंसा की जाय; कम है। आप "आरम्भ" को और अच्छे ढंग से निकालेंगे।

डॉ० राजेश्वर सक्सेना
बिलासपुर (म. प्र.)

आरम्भ-२ मिला। यह तो बहुत ही अच्छा प्रयत्न है। सभी इकाइयां यह काम करे तो बहुत बल मिले।

डॉ० कमलाप्रसाद
कार्यकारी अध्यक्ष म. प्र. प्र. ले. सं.
भोपाल

बुलेटिन मिला। बहुत अच्छा है। बधाई !

ज्ञानरंजन
महासचिव म. प्र. प्र. ले. सं.
जबलपुर

"आरम्भ" मिला। निश्चय ही जो आज है; उससे बेहतर रचने की प्रक्रिया में "आरम्भ" आगे बढ़ेगा। जीवन जगत से हटकर बातें करना साहित्य में छल ही होगा। हम "आरम्भ" के साथ हैं। "आरम्भ" प्रतिगामी साहित्य के रचनाकारों के लिए चुनौती है–

छोड़ो मनोगत प्रतिमानों को
जो प्रगतिपथ में बाधक है।
मूल्यांकन करो उसी का,
जो जीवन जग में व्यापक है।

यदुनन्दन "रसिक"
स्टेशन रोड, समस्तीपुर, बिहार

"आरम्भ" का दूसरा अंक पहले से बेहतर है। रामकुमार रामरिया की कहानी "अनाथ जंगल" बहुत अच्छी कहानी है। कवप की कविता, जीवन यदु का गीत, रफीक खान का लेख तथा रपट सभी अच्छे हैं। पहले अंक में भी कविताएं अच्छी रही। "आरम्भ" के लिए मेरी शुभकामनाएं।

सनत कुमार
वल्लभ विद्यानगर (गुजरात)

आरम्भ-दो, मई ८६ की प्रति प्राप्त हुई। अंक की सामग्री रुचिकर है। लोक संस्कृति और कृषि के अन्तर्सम्बन्ध" लेख आज के परिप्रेक्ष्य में उत्तम है। स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम की रपट का समायोजन भली भांति किया गया है। 'इकाई की खबरें" शीर्षक स्तम्भ में अन्य इकाइयों की सूचनाएं भी प्रकाशित करिये; जिससे समस्त इकाइयाँ एक दूसरे की गतिविधियाँ जान सकें।

डॉ० मकबूल अहमद
किशोरगंज, पत्रा (म. प्र.)

आरम्भ-२ मिला। प्रयासों को उचित दिशा देना सम्पादकीय कला है। रचनाओं का स्तर क्रमशः विकसित होने दें। उन्हें ठोक बजा लें। रचना प्रकाशित होने पर सार्वजनिक संपत्ति होती है। संभावनाओं को ज्ञान के अनुरूप दिशा व दशा दें। प्रयास प्रगति के कदम चूमेंगे।

प्रगतिबोध आशा के साथ
ऐलिकजेन्डर
सम्पादक-प्रसंग
मिशन कम्पाउन्ड-छपारा
सिवनी (म. प्र.)

आरम्भ-२ में जीवन यदु की सशक्त रचना पसंद आई। लखनऊ स्वर्ण जयन्ती की रपट अच्छा प्रयास है। यद्यपि लघु पत्रिका का निरन्तर प्रकाशन कठिन काम है; फिर भी "आरम्भ" का पटाक्षेप नहीं होना चाहिए। शुभकामनाओं सहित।

सोमेश्वर सिंह
सचिव प्र. ले. सं. उत्तर करौंदिया
सीधी म. प्र.

आरम्भ का दूसरा अंक मिल गया। पहले से बेहतर है। लगातार परिष्कार होगा। मेरी सलाह है कि पत्रिका को क्षेत्रीय की अपेक्षा राष्ट्रीय पहचान दें, और रचनाओं के साथ रियायत न करें; अन्यथा कमजोरी का लाभ कमजोर रचनाकार उठाएंगें। आप लगातार काम करते रहें।

डॉ० वीरेन्द मोहन
हिन्दी विभाग
विश्वविद्यालय सागर (म. प्र.)

आरम्भ मिला। आप इसके माध्यम से बहुत ही अच्छा रचनात्मक प्रयास कर रहें हैं।

शैलेन्द्र कुमार "शैली"
परी बाजार, भोपाल

आप "आरम्भ" निकाल रहे हैं; यह कम महत्वपूर्ण नहीं है। अंक-२ में कविता, कहानी, लेख सब अच्छे एवं पाठक को सही समझ देने के उद्देश्य को पूरा करते हैं। आस पास के शहर एवं कस्बों के रचनाकारों की अच्छी रचनाओं को भी स्थान दें– बुलेटिन में विविधता आयेगी। आपके साथ जुड़े समस्त साथियों तक मेरी बधाई पहुंचाएं और यह विश्वास कि हम सब साथ हैं, और अपने विचारों के अनुरूप दुनियां के बनने तक साथ रहेंगे।

राजेन्द्र ओझा
फाफाडीह, रायपुर (म. प्र.)

"आरम्भ" का अंक दो मिला। सामग्री-विषय प्रभावित करते हैं। जनग्राही-जनवादी कविताओं की कमी को दूर करिये। विज्ञापन भी अधिक जुटा कर पत्रिका की रीढ़ मजबूत करिये। समयानुसार थोड़ी आकर्षक बना सकें तो कोई आपत्ति नहीं।

भरत बेचैन
संपादक "जगार" साप्ताहिक
जगदलपुर (म. प्र.)

अंक बेहतर है; और बेहतर बने। इसी शुभकामना के साथ

जीवन यदु
खैरागढ़ (म. प्र.)

आरम्भ-२ की प्रति मिली। बड़ी प्रसन्नता हो रही है। आप लोगों की सक्रियता का आभास समाचार पत्रों से मिलता रहता है। जो है; उससे बेहतर रचनें की प्रक्रिया में; आप लोग अपनी सीमाओं के अन्दर जो भी कर रहे हैं; वह निश्चय ही बेहतरीन है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

स्वराज्य करूण
सहा० जनसम्पर्क अधिकारी
दन्तेवाड़ा (बस्तर)

"आरम्भ" के द्वितीय अंक में जीवन यदु और कवष की कविताएँ अच्छी लगी। सम्पादकीय लेख; सूझबूझ और सजगता से परिपूर्ण है। आलेख और कहानी बेहतर रचनाएँ हैं। "आरम्भ" को मासिक या द्वैमासिक का स्वरूप देवें। शुभकामनाओं सहित —

कृष्ण कुमार सोनी "कटाक्ष"
सोमनी, राजनांदगाँव

आप लोगों का प्रयास प्रशंसनीय है। इस अंक में सामग्री चयन आवश्यकतानुरुप ही है। संभव हो तो एक पृष्ठ किसी महत्व-पूर्ण सामयिक राष्ट्रीय; अन्तर्राष्ट्रीय घटना के विश्लेषण हेतु भी दें। बुलेटिन में विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रम सूचना कम से कम दी जावे। इन खबरों के लिए हमें अन्य अखबारों का उपयोग करना चाहिए तथा उन बचे पृष्ठों का उपयोग अपनी समझ और आवश्यकता के हिसाब से करना चाहिए। बुलेटिन नियमित हो तो बहुत अच्छा है।

डॉ० आलोक वर्मा
विवेकानन्द नगर रायपुर म. प्र.

(शेष पृष्ठ ७ का ,

कता किसी मिथकीय कल्पना की नहीं है। यह कथात्मकता वस्तु की आन्तरिक एकात्मकता से पैदा हुए है।

नथमल शर्मा की कविता में मनुष्य की तीन पीढ़ियाँ हैं। इन तीनों पीढ़ियों की जीवन पद्धति के द्वारा विकास की प्रगतिमान परम्परा और भविष्य की आशावादिता सामाजिक संबंधों के द्वारा देखा जा सकता है। इसके कारण कविता का क्षेत्र व्यापक हो गया है। यह कविता अपनी व्यापकता में मनुष्य जीवन की व्यापक परिधि तक पहुँच गई है और इस कविता से उभरे सवाल दिक्काल से परे नहीं, वरन् काल से उपजे और जुड़े है, नथमल शर्मा की कविता की एक विशेषता को रेखांकित किया जाना चाहिए उसकी ट्रैजिक संवेदना। इस ट्रैजिक संवेदना को उसकी पूरी सामाजिक विकरालता के साथ देखने पर कवि को एक बहुत ही विस्तृत केनवास मिल जाता है। इन कविताओं में वस्तु की विविधता देखने को मिलती है। बाजार, स्कूल से लौटना, मेरा दोस्त, बालाघाट के नाम, सबसे अधिक संभावनापूर्ण कविताएँ हैं।

• सूरज को देखो (कविता)

हिन्दी विभाग
सागर विश्वविद्यालय
नथमल शर्मा

म० प्र० प्रगतिशील लेखक संघ (इकाई)
बिलासपुर द्वारा प्रकाशित

इकाई समाचार–

☐ दल्लीराजहरा इकाई

१९ जून ८६ को इकाई द्वारा संत कवि कबीर पर एक चर्चा गोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री जे० एल० सोनवानी की अध्यक्षता में सम्पन्न इस चर्चा गोष्ठी में कोमलसिंह शार्वा प्राध्यापक शा० नेमीचन्द जैन महा० राजहरा और चन्दनसिंह ठोस ने कबीर के "व्यक्तित्व एवं कृतित्व" पर अपने अपने आलेख का पठन किया। आलेख पर सांवलाराम डाहरे, जे० आर० महिलांगे, जी० पी० पाठक, ओ० आर० बंजारे, चाँदमुबारक कुरैशी और बंगाली प्रसाद ताम्रकार ने अपने अपने विचार रखे। चर्चा मे आर० एन० ठाकुर, सुभाषचन्द कुर्रे, और खेदूराम ताम्रकार ने भी हिस्सा लिया। सचालन इकाई सचिव दादूदयाल ने किया।

३१ जुलाई ८६ को इकाई द्वारा प्रतिवर्ष की भांति मुंशी प्रेमचंद की जयंती का कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम में राजीव शुक्ल प्राध्यापक शा० ने० च० जैन महा० राजहरा; ने "प्रेमचंद : एक व्यक्तित्व" पर; कोमलसिंह शार्वा प्राध्यापक शा० ने० चं० जैन महा० राजहरा ने "प्रेमचंद की रचना और वर्तमान परिस्थितियों में उनकी उपयोगिता" पर; सॉवलाराम डाहरे ने "प्रेमचन्द के पात्र" तथा डी. के. राव (मजदूर नेता राजहरा) ने 'प्रेमचंद के साहित्य मे मजदूर' विषय पर व्याख्यान दिये। कार्यक्रम मे व्ही. आर. निराला, चंदनसिंह ठोस, अनिल यादव ने भी अपने विचार रखे। बंगालीप्रसाद ताम्रकार की अध्यक्षता में सम्पन्न इस कार्यक्रम का संचालन इकाई सचिव एवं "आरभ" के सम्पादक दादूदयाल ने किया। बाद में उपस्थित कवियों ने अपनी अपनी कविताओं का पाठ किया। जिनमें बंगाली प्रसाद ताम्रकार, चन्दनसिंह ठोस, राज अवस्थी लोहा, पी. के. त्रिवेदी, व्ही. आर. निराला, सांवलाराम डाहरे, राजीव शुक्ल, अमरचन्द बर्मन, घनश्याम तिवारी और दादूदयाल प्रमुख थे। संचालन दादूदयाल ने किया।

☐ सीधी इकाई

८–९ मार्च ८६ को प्रगतिशील लेखक संघ की स्वर्ण जयन्ती पर सीधी में दो दिवसीय समागीय स्तर पर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात जनकवि बाबा नागार्जन ने किया। सीधी इकाई के सचिव श्री सोमेश्वर सिंह ने म० प्र० प्र० सं० के अध्यक्ष श्री हरिशंकर परसाई का प्रेषित संदेश पढ़कर सुनाया इस कार्यक्रम में "वस्तु जगत में भ्रम और वास्तविकता का संघर्ष;" "लोक मानस और संस्कृति जागरण (बघेली;" सामाजिक विघटन और साहित्यकार ?तथा हिन्दी साहित्य के विकास में प्रगतिशील चिन्तन की भूमिका गये। आलेख सत्र की अध्यक्षता डॉ० श्यामसुन्दर मिश्र और मोहन श्रीवास्तव ने की। संचालन डॉ० रामलखन गुप्त (अनूपपुर) ने किया।

(पृष्ठ ४ पर)

रपट

सीधी–सुविख्यात प्रगतिशील कवि–कथाकार श्री नागार्जुन के सक्रिय रचनाशील जीवनयात्रा के पचहत्तर वर्ष पूरा होने के संदर्भ में प्रगतिशील लेखक संघ इकाई सीधी द्वारा "नागार्जुन के समग्र साहित्य की प्रगतिशील आन्दोलन में भूमिका" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन स्थानीय पालिका भवन में सम्पन्न हुआ।

२० जुलाई ८३ को आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री देवीशरण "ग्रामीण" ने की। गोष्ठी का शुभारम्भ करते हुए सीधी इकाई के सचिव श्री सोमेश्वर सिंह ने कहा कि जब हम नागार्जुन के समग्र साहित्य का प्रगतिशील आन्दोलन की भूमिका के परप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करते हैं तो लगता है कि वास्तव में नागार्जुन ने कविता को संघर्षों का हथियार बना लिया है। वे एक क्रांतिकारी कवि हैं।

संगोष्ठी को गतिशील बनाते हुए महाविद्यालय सीधी में हिन्दी के प्रोफेसर डा. लहरी सिंह ने कहा कि प्रगतिशील लेखक संघ की यह बात मुझे अच्छी लगती है कि उससे जुड़े हुए साहित्यकार हमेशा सच्चाई के साथ शोषण उत्पीड़न को उजागर करते हैं। निराला ने "कुकरमुत्ता" कविता से शुरुआत की वह साहित्य में यथार्थ की परम्परा बन गया। नागार्जुन के उपन्यास "दुखमोचन" का पात्र स्वतः लेखक के चरित्र का विवेचन करता है। प्रगतिशील कविता में बाबा का स्थान आज भी बना हुआ है। नागार्जुन बेहद दर्जे के ईमानदार कवि हैं। वे किसी दलगत राजनीति से प्रतिबद्ध नहीं हैं इसीलिए १९६२ में चीनी आक्रमण के समय नागार्जुन की कविता इन पंक्तियों के साथ फूट पड़ी –

"यह कौन है माओ
थूंक से नहलाओं
तोड़ दो दाँत
इसे कब्र में दफनाओं"।

डा० राजकरण शुक्ला ने कहा कि कोई साहित्य समाज से अछूता नहीं रहता, देश काल से जुड़ा रहता है, साहित्य पहले है वर्गीकरण बाद में। जबकि हरिनारायण "हरीश" के शब्दों में प्रगतिशील साहित्य समाज का साहित्य है वह एक वर्ग का पोषक है तो दूसरे का प्रबल विरोधी। नागार्जुन ने रुढ़ियों अन्याय के खिलाफ ही लिखा है।

सहायक संचालक सूचना प्रकाशन श्री सुभाषचन्द्र अरोरा की राय थी कि नागार्जुन की कविताएं जितनी सरल लगती है उतनी हैं नहीं, बहुत गूढ़ हैं। जब भी बाबा का जिक्र आता है समुद्र की गहराई याद आती है। श्री शिवशंकर मित्रा के शब्दों में नागार्जुन की गहराई विविध हैं। वे गांव और गरीबी के चित्र को बड़ी ही बारीकी के साथ चित्रित करते हैं। उनका साहित्य आज की नई पीढ़ी को दिशा देता है।

साप्ताहिक "राष्ट्रीय जनवाद" के सम्पादक श्री अरविन्द त्रिपाठी ने कहा कि नागार्जुन महान होते हुए भी उतने गूढ़ नहीं है। जिस साहित्य के प्रति हम अज्ञान हो उसे गूढ़ न बनाएं। यह भुला देने का अच्छा तरीका है। प्र. ले. स. से ऐसे भी साहित्यकार जुड़े रहे हैं जो कम्यूनिस्ट नहीं थे। तुलसी का साहित्य किसी भी मायने में आज के "प्रगतिशील" रचनाकारों से कम नहीं उनका साहित्य समाज को आगे बढ़ाता हैं वही प्रगतिशील है। हम उस विज्ञान को समझें जो दुनिया की कुरुपता को बदलने की बात करता है।

अधिवक्ता पारसनाथ पान्डे ने कहा कि प्रत्येक व्यवस्था में रूढ़िगत परम्पराएं रही हैं और नागार्जुन ने व्यवस्था की इन्ही रुढ़ियों पर चोट की है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे श्री देवीशरण सिंह "ग्रामीण" ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में संगोष्ठी का समापन करते हुए कहा कि नागार्जुन की कविता जीवन की अनुभूति है। वह जीवन की सहज अनभूति होती है तो वह समाज से पैदा होती है। इसके लिए जरुरी है कि वह समाज के किसी वर्ग से जुड़ी हो। इसी तरह सत्ता भी किसी वर्ग से जुड़ी होती है। डा. नामवर सिंह ने नागर्जुन को आधुनिक कबीर कहा है। निश्चित रूप से यह सत्य है।

संगोष्ठी में नगर के प्रबुद्ध साहित्यकारों सहित सर्व श्री विजय सिंह, जुबेर अहमद, रमेश वर्मा, धीरेन्द्र त्रिपाठी, राजेन्द्र तिवारी, जे० के० मिश्रा को उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

इप्टा हलचल

दल्ली राजहरा (इप्टा)

इप्टा दल्लीराजहरा ने १५ अगस्त को संध्या ७ बजे श्री सतीश शर्मा लिखित नाटक "बरगद बरगद कुत्ता" का मंचन सिटीजन क्लब में किया। इस नाटक में मदारी की भूमिका में, राजेन्द्रकुमार, जमूरे की भूमिका में कौशिक चक्रवर्ती सराहे गये। अरविन्द अवस्थी रावण, सिद्धार्थ चक्रवर्ती कंस, सिराजुद्दीन दुर्योधन, किशोरीलाल कोतवाल, साँवलराम डाहरे हिरण्यकश्यप, की भूमिकाएं प्रभावशाली थी। एक मात्र स्त्री पात्र देवी की भूमिका में कु. भावना श्रीवास्तव ने अपनी अभिनय प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया। इस नाटक का निर्देशन सिद्धार्थ चक्रवर्ती ने और संचालन दादूदयाल ने किया। इप्टा के रंग कर्मियों ने इस नाटक का मंचन शहर के प्रमुख चौक और आसपास के गाँवों में करने का निर्णय लिया है।

क ख ग (इप्टा) सतना

सीधी में सम्पन्न प्र. ले. सं की स्वर्ण जयंती के संभागीय सम्मेलन में क ख ग (इप्टा) सतना ने दो नाटको का मंचन उपस्थित रचनाकारों के मध्य किया। पहला नाटक सतीश शर्मा द्वारा लिखित "बरगद बरगद कुत्ता" और दूसरा नाटक था श्री मुद्राराक्षस कृत "आला अफसर"। नाटक के पात्रों को सर्वश्री शशिधर मिश्र, शरद वर्मा, अनिता शुक्ला और मणिमय मुखर्जी अपने जीवन्त अभिनय से जीने में कामयाब रहे।

"आरंभ" बुलेटिन के लिए शुभकामनाएँ :-

महामाया श्रमिक सहकारी समिति

ब्रांच – कोकान

रेजिक कान्ट्रेक्टर भिलाई स्टील प्लांट, भिलाई

कार्यालय – दल्ली राजहरा, जिला दुर्ग (म. प्र.)

"आरम्भ" के लिए शुभकामनाएँ :-

रामनिवास अग्रवाल लघु उद्योग

बरगवां, जिला-सीधी (म० प्र०)

जलाऊ, इमारती लकड़ी के थोक व फुटकर विक्रेता

"आरम्भ" के लिए शुभकामनाएँ :-

मेसर्स शर्मा ट्रान्सपोर्ट कम्पनी

रजि० नं० २३२०

सिविल माईनिंग और ट्रान्सपोर्ट कान्ट्रेक्टर

दल्लीराजहरा, जि०-दुर्ग (म. प्र.)

सभी प्रकार के प्रमाण पत्रों की फोटो स्टेट कापी, टायपिंग एवं सायक्लोस्टाईलिंग के लिए मिलें :-

ललित इलेक्ट्रोकापीयर्स

जैन भवन रोड़, दल्लीराजहरा, जि०-दुर्ग (म० प्र०)

शुभकामनाएँ :-

जय मां विन्ध्याचल देवी विडियो सेन्टर

सोमनी, जिला – राजनांदगांव म० प्र०

(प्रो० अभिमन्यु सिंह)

हर प्रकार के रेडियो, टेपरिकार्डर के विक्रेता एवं सुधारक

दामोदर एवं साउन्ड सर्विस

पुराना बाजार, दल्ली राजहरा

– प्रो० दामोदर साहू

प्रीति डेयरी एण्ड स्वीट्स

हाई स्कूल सेक्टर, दल्लीराजहरा

शुद्ध घी, दही, मक्खन एवं खोवे की बनी मिठाइयां मिलने का एक मात्र स्थान

– प्रो० संतोष जैन

* सन्तोष प्रोविजन स्टोर्स *

कपड़ा, किराना के चिल्हर विक्रेता

महामाया माइन्स

प्रो० गैन्दमल जैन

❊ शिव किराना स्टोर्स ❊

अनाज एवं किराने का विक्रेता

महामाया माइन्स

प्रो० तगाराम शर्मा
गोपीलाल शर्मा

"आरम्भ" के लिए शुभकामनाएं :–

जैन फिटींग सेन्टर

न्यू बस स्टैंड के पास, दल्ली राजहरा, (म० प्र०)

उत्तम फिटींग और बेहतरीन सिलाई का प्रशंसित स्थान

सफारी सूट स्पेशलिस्ट

– प्रो० दिनेश जैन

❊ जैन प्रोविजन स्टोर्स ❊

उत्तम खाद्य सामग्री प्राप्ति का एक विश्वसनीय स्थल

न्यू मार्केट, दल्ली राजहरा जिला-दुर्ग (म० प्र०)

"आरम्भ के लिए शुभकामनाएं :–

सुगन्धमय बहारों के साथ, लालवानी की अगर बत्तियां

निर्माता :–

राधास्वामी सुगन्ध भण्डार

न्यू आशा टॉकीज के पास
दल्लीराजहरा जि० – दुर्ग (म० प्र०)

"आरम्भ" के आगामी दो अंक

- दल्लीराजहरा नगर रचनाकार परिचय विशेषांक।
- सन् १९६० से अब तक दल्लीराजहरा में सृजनरत साहित्यकारों के परिचय (छायाचित्रों) सहित संग्रहित रचनाएँ।
- वे रचनाएँ भी अपनी नयी, पुरानी रचनाएँ भेजें; जो राजहरा में सेवारत थे; और अब अन्यत्र चले गये हैं।
- एक ऐतिहासिक महत्व साहित्यिक आयोजन।
- रचनाएं ३० दिसम्बर '९६ तक स्वीकार्य।

- आसपास के युवा कवियों पर एक संग्रहणीय कविता–अंक।
- रचनाकारों के संक्षिप्त परिचय के साथ।
- कविताएं ३० दिसम्बर तक अवश्य भेज दें।
- पांच-पांच कविताएं।

कुछ सम्मिलित युवा कवियों के नाम :–

रफीक खान, जीवनयदु, डॉ० आलोक वर्मा, कवष, एकान्त, श्रीवास्तव, रामकुमार रामरिया, दादूदयाल.....

सम्पर्क सूत्र – दादूदयाल 16 (I) II B अस्पताल सेक्टर दल्लीराजहरा 491223 १. आरंभ बुलेटिन अनियतकाल और अव्यवसायिक (केवल सदस्यों के लिए) २. सम्पादन एवं प्रबंध पूर्णतः अवैतनिक ३. प्रकाशक प्रगतिशील लेखक संघ दल्ली राजहरा इकाई मुद्रक–सहकारी मुद्रणालय सेक्टर १० भिलाई सहयोग राशि २–०० ।